॥ ॐसद्गुरुप्रसादि ॥

अथ श्रीगुरुनानकसूर्य्योदयजन्मसाखी

का

उत्तरार्द्ध प्रारम्भः ।

दोहा ।

जाकी कीरति चाँदनी तम अज्ञान निकन्द ।
तिहँ गुरु नानकचन्द के बन्दौं पद अरबिन्द ॥ १ ॥

कबित्त ।

ारद सघन सम बिसद बरन तन सरब सुखद जिहँ सिमिरत सिव अज ।
ाति तल धरनि गगन गुनगन गिर बिमल करन मन मुकुर चरन रज ॥
मजर जरन शुभकरन भगति बसि भव भयहरन परन नहिँ तिहँ तज ।
ाहत जु भुकति मुकति सुन जड़ मन असरन सरन तु अस सतिगुरु भज॥२॥

सवैया ।

भेद न पावत वेद सबै ससि सेस सुरेस करै गुन गानक ।
कारन रूप उबारन बारन गोद्विज हेतु धर्यो नर बानक ॥
नायक देव अदेवन को हर शंभुज सेवत श्री भव भानक ।
तेज दिपै दिन मानिक को सुमिरो सुखदानक सो गुरु नानक ॥
कौन अदेवन ते जिहँ देव बर्यो जग में जस जासु अजावा ।
मीठ कर्यो तरु रीठ जिनै पुनि बेग फिर्यो पग लागत कावा॥
पाँच लगी अँगुरी अब लौं गिर पेखि सुरासुर भे सब तावा ।
सेवहु ताहि भनै हर शंभुज जाहर पीर गुरू जग बाबा ॥ ४ ॥